ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-4* Issue-1* February- 2019
Innovation The Research Concept

महाविद्यालयों के प्राचार्यों की नेतृत्व क्षमता का अध्ययन

मोनिका श्रीवास्तव
व्याख्याता,
डी0एल0एड0 विभाग,
यशराज कालेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज,
कानपुर

सारांश

शिक्षा मानव विकास की आधारशिला है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास होता है, उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि होती है तथा व्यवहार में परिवर्तन होता है और वह सभ्य एवं सुसंस्कृत प्राणी बनता है। यूँ तो शिक्षा की प्रक्रिया मानवेतर प्राणियों में चलती है परंतु उनकी शिक्षा केवल आत्मरक्षा के कार्यों तक ही सीमित रहती है जबकि मनुष्य की शिक्षा उसमें विवेक जाग्रत करती है और इस विवेक से वह अपनी सभ्यता एवं संस्कृति का निरंतर विकास करता है।

मुख्य शब्द : महाविद्यालय, प्राचार्य।

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और जहाँ समाज है वहाँ नेतृत्व है। संभवतः जबसे समाज है तभी से नेतृत्व का भी अस्तित्व है। नेतृत्व एक प्रक्रिया है जिसमें कोई व्यक्ति सामाजिक प्रभाव के द्वारा लोगों की सहायता लेते हुए एक सर्वनिष्ठ कार्य सिद्ध करता है। नेतृत्व वह है जो अंततः लोगों के लिए ऐसा मार्ग बनाए जिसमें लोग अपना योगदान देकर कुछ साधारण कर सकें।

लॉपियर तथा फ्रान्सवर्थ के अनुसार –

'' नेतृत्व वह प्रक्रिया है जो अनुयायियों के व्यवहार की अपेक्षा प्रभावशाली तथा उच्च कुशलतापूर्वक होता है तथा जिसके द्वारा अनुयायियों को लक्ष्य प्राप्त कराया जा सकता है। यह वह व्यवहार है जिसके द्वारा व्यक्तियों को प्रोत्साहित, निर्देशित या नियंत्रित किया जा सकता है। ''

वास्तव में कुछ लोगों में नेतृत्व की भावना जन्मजात होती है, कुछ में सुसंयोग के कारण भी नेतृत्व का गुण विकसित करने में प्रमुख भूमिका निभाता है और यह प्रशिक्षण बचपन से प्रारंभ हो जाता है। इस प्रशिक्षण का सबसे उत्तम स्थान विद्यालय होता है। बोगार्ड्स ने नेतृत्व की उत्पत्ति के निम्नलिखित तीन प्रमुख आधार बताए हैं– वंशानुक्रम, सामाजिक उत्तेजनाएं तथा व्यक्तित्व।

नेतृत्व का वास्तव में क्या आशय है, इस बात पर लोग एकमत नहीं हैं। कुछ लोग इसका आशय संगठन क्रम में एक विशिष्ट पद या स्थिति से लगाते हैं, जैसे विद्यालय में प्रधानाचार्य सर्वोच्च पद पर आसीन होने के कारण नेता माना जाता है। कुछ अन्य लोग व्यक्तिगत विशेषताओं के आधार पर नेतृत्व को परिभाषित करते हैं अर्थात् कुछ विशिष्ट गुण जैसे परिपक्वता, चतुराई योग्यता आदि रखने वाले नेता माने जाते हैं।

Robert C. Appleby के अनुसार–

"Leadership is a means of direction is the ability of management to induce subordinates to work towards group ideas with confidence & keenness."

आर्डवे टीड के अनुसार–

'' नेतृत्व गुणों का ऐसा संयोजन है जिसके होने से एक व्यक्ति दूसरों से कुछ कार्य करा पाने के योग्य हो जाता है, क्योंकि उसके प्रभाव के अन्तर्गत वे ऐसा करने के इच्छुक होते हैं। ''

बहुधा यह देखा गया है कि जो व्यवसाय में असफल होते हैं तथा कुछ वर्ष चलने के पश्चात् बंद हो जाते हैं, अच्छे नेतृत्व के अभाव से ग्रसित रहे होते

हैं। आज भी बड़ी– बड़ी कम्पनियों को ऊँचे वेतन देने पर भी पर्याप्त संख्या में ऐसे प्रबंधक नहीं मिल पाते जो नेतृत्व प्रतिभासंपन्न हों। नेतृत्व निष्पक्ष, निःस्वार्थी, योग्य व साहसी होना चाहिए। आचरण द्वारा आदर्शों का प्रस्तुतीकरण नेतृत्व को प्रभावशाली बनाने का एकमात्र अचूक शस्त्र होना चाहिए । नेतृत्व की सरकार, शिक्षण संस्थाओं, सामाजिक व आर्थिक संस्थाओं व अन्य क्षेत्रों में अत्यधिक महत्व है। मैं शिक्षण संस्था के क्षेत्र से जुड़ी होने के कारण इसका प्रभाव महाविद्यालयों के प्राचार्यों पर देखना चाहती हूँ। इसीलिए मैंने शोध हेतु *"महाविद्यालयों के प्राचार्यों की नेतृत्वक्षमता का अध्ययन "* विषय चयनित किया है।

अध्ययन की आवश्यकता

सामान्यतः ऐसे लोग कम होते हैं जिनमें कार्य करने की स्वतः प्रेरणा पाई जाती हो बल्कि अधिकांश लोगों में यह प्रेरणा जाग्रत करनी होती है। इस प्रेरणा को जाग्रत करने में नेतृत्व की प्रमुख भूमिका होती है। उपक्रम लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कर्मचारियों को प्रेरणादायक शक्ति के रूप में नेतृत्व की विशिष्ट आवश्यकता होती है। एक उपक्रम के सफलतापूर्वक संचालन के लिए प्रबंधकों की नेतृत्वक्षमता को विकसित करके अनौपचारिक नेतृत्व के प्रभाव को रोकना नितांत आवश्यक है। एक उपक्रम के कर्मचारी विभिन्न सम्प्रदायों, धर्मों, शैक्षणिक पृष्ठभूमियों तथा आर्थिक स्तरों वाले होते हैं। इन विविधताओं के रहते हुए उनमें समूह भावना विकसित करना और बनाए रखना उपक्रम की सफलता के लिए अत्यन्त आवश्यक है और यह उचित नेतृत्व द्वारा ही संभव हो सकता है। नेतृत्व का यह महत्वपूर्ण कार्य है कि वह अपने समूह के सदस्यों की आकांक्षाओं तथा इच्छाओं को समझे तथा उन्हें संतुष्ट करने में योगदान दे। सदस्यों को आगे बढ़ने तथा विकास करने के अवसर प्रदान करे। नेतृत्व कार्य का नियोजन तथा समूह सदस्यों को लक्ष्य प्राप्ति की ओर निर्देशित करता है। नेतृत्व समूह सदस्यों को क्षमतानुसार कार्य करने के लिए प्रेरित करता है तथा उनके कार्य में समन्वय उत्पन्न कर लक्ष्य को प्राप्त करने में सहयोग प्रदान करता है। नेतृत्व समूह के सदस्यों को उनके कार्य तथा हितों से संबंधित सूचनाएं प्रेषित करता है तथा उन्हें कार्य करते समय कठिनाई उत्पन्न होने पर तकनीकी तथा अन्य प्रकार की सहायता प्रदान करता है। न केवल व्यावसायिक उपक्रमों को ही बल्कि सरकार, शिक्षण संस्थाओं, सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं को भी प्रभावशाली नेतृत्व की आवश्यकता होती है।

समस्या कथन

महाविद्यालयों के प्राचार्यों की नेतृत्वक्षमता का अध्ययन ।

अध्ययन के उद्देश्य

महाविद्यालयों के प्राचार्यों की नेतृत्वक्षमता का अध्ययन ।

अध्ययन की परिकल्पना

महाविद्यालयों के प्राचार्यों की नेतृत्वक्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन की परिसीमाएं

समय के अभाव के कारण मैंने अध्ययन के परिक्षेत्र के लिए कानपुर जिले में स्थित छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय से संबंधित 5 महाविद्यालयों का चयन किया है।

अध्ययन की शोध विधि

प्रस्तुत शोध सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया है। सर्वेक्षण विधि में प्रतिचयन प्रक्रिया को विशेष महत्व दिया जाता है। केवल एक समष्टि के प्रतिदर्श के द्वारा ही एक सामाजिक अथवा शैक्षिक क्षेत्र से संबंधित एक समस्या के विषय में ऐसे प्रतिनिधित्यात्मक आंकड़े एकत्र किए जाते हैं, जोकि संपूर्ण समष्टि के स्वरूप का लगभग प्रतिबंबित करते हैं। ऐसे प्रतिदर्श सर्वेक्षण पर आधारित अध्ययनों को सर्वेक्षण शोध कहते हैं।

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि के आधार पर ही एक प्रतिदर्श चुन करके उपकरण का प्रयोग करके आंकड़े संग्रहित किए गए हैं जो कि पूरे समष्टि का प्रतिबिंब हैं तथा प्रतिदर्श का आकार प्रसंभावक सिद्धांत या यादृछिक प्रतिचयन है।

न्यादर्श विधि

शोधार्थी ने महाविद्यालयों के शिक्षकों के चयन के लिए कानपुर जिले में स्थित 74 महाविद्यालयों के नाम की पर्चियों को यादृच्छिक न्यादर्शन विधि के अन्तर्गत लाटरी विधि द्वारा 5 महाविद्यालयों का चयन किया। उन 5 महाविद्यालयों में जाकर वहाँ के शिक्षकों के नाम की पर्चियाँ बनाई तथा उन महाविद्यालयों से 20–20 शिक्षकों का चयन लाटरी विधि से किया ।

अध्ययन के उपकरण

प्रस्तुत शोध में के0 एस0 मिश्रा द्वारा बनाई गई Leadership Style Scale (LSS) की प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। इस प्रश्नावली में व्यवहारवादी, परिवर्तनकारी तथा टॉक्सिक नेतृत्वक्षमता से संबंधित कुल 100 प्रश्न दिए गए हैं।

परीक्षण का प्रशासन एवं आँकड़ों का संकलन

शोधार्थी ने महाविद्यालयों के प्राचार्यों की नेतृत्वक्षमता के अध्ययन के लिए सर्वप्रथम न्यादर्श में चयनित 5 महाविद्यालयों के 20–20 शिक्षक / शिक्षिकाओं को चयनित किया। उनको शोध कार्य हेतु आंकड़े संकलन करने के लिए प्रश्नावली भरने को दी गयी। प्रश्नावली पूर्ति होने के पश्चात् प्रश्नावली वापस लेकर आंकड़ों का

संकलन किया। इस प्रकार अनुसंधान में अध्ययन प्रपत्र के प्रशासन को संपन्न किया।

प्रयुक्त सांख्यिकी

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, सांख्यिकी अर्थात् संख्याओं की गणना। सांख्यिकी किसी गुणात्मक व्यवहार के लिए टेस्ट का प्रयोग करके उसके संख्यात्मक आंकड़े निकालना है।

Bowley के अनुसार–

'' सांख्यिकी गणना का विज्ञान है। ''

अर्थात् '' सांख्यिकी वह विज्ञान है जो किसी समस्या के संबंधित समंकों कां एकत्रित तथा विश्लेषित करके आवश्यक निष्कर्ष ज्ञात करने से संबंध रखता है। ''

प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय गणना में प्रतिशत की गणना की गई है।

प्रतिशत–

किसी संख्या में 100 से गुणा करने पर जो राशि प्राप्त होती है वह उस संख्या का प्रतिशत होता है। इसे % से प्रदर्शित करते हैं।

निष्कर्ष

इस तालिका में प्राचार्य की संपूर्ण नेतृत्वक्षमता प्रदर्शित की गई है–

सहमत	अनिश्चित	असहमत
73%	16%	11%

किसी भी शोध अध्ययन में परिणाम प्राप्त करना एवं उसकी सही रूप से व्याख्या करना अति आवश्यक होता है। नेतृत्वक्षमता के मापन हेतु मैंने के0 एस0 मिश्रा द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया है। जिसमें कुल 84 कथनों में प्राचार्य की नेतृत्वक्षमता से संबंधित कथनों से प्राप्त आंकड़ों में 73 % लोग इस बात से सहमत हैं कि महाविद्यालयों के प्राचार्यों में नेतृत्वक्षमता का गुण है। इसके द्वारा प्राप्त आंकड़ों को विश्लेषण करने पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि महाविद्यालयों के प्राचार्यों की नेतृत्वक्षमता औसत है अर्थात् '' महाविद्यालयों के प्राचार्यों की नेतृत्वक्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। ''

अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ –

नेतृत्व लोगों को प्रभावित करने की एक प्रक्रिया है जिससे वे पारस्परिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए इच्छापूर्वक प्रयास करते हैं। नेतृत्व व्यक्ति की वह योग्यता है जो अंततः व्यक्ति के लिए ऐसा मार्ग बनाए जिसमें लोग अपना योगदान देकर कुछ असाधारण कर सकें। नेतृत्वक्षमता का प्राचार्य के जीवन में अत्यधिक महत्व है क्योंकि नेतृत्वक्षमता से विद्यालय के प्रबंध में सहायता प्राप्त होती है।

प्रस्तुत शोध में आंकड़ों से प्राप्त निष्कर्ष में सबसे ज्यादा प्रतिशत व्यवहारवादी नेतृत्वक्षमता को प्राप्त हुआ है। अतः विद्यालय के उत्थान, विकास के लिए तथा शिक्षा तथा बालक के विकास के लिए प्राचार्य में व्यवहारवादी नेतृत्वक्षमता का होना अत्यन्त आवश्यक है।

प्राचार्य अपने अधीनस्थ कर्मचारियों, शिक्षकों को उनकी योग्यता के अनुसार कार्य प्रदान करते हैं तथा उनसे कार्य करवाने के लिए कई तकनीकों या उपायों का प्रयोग करते हैं अर्थात् किस कर्मचारी से कौन–सा कार्य करवाना है, परिवर्तनकारी नेतृत्वक्षमता से यह गुण विकसित होता है। अतः प्राचार्य में परिवर्तनकारी नेतृत्वक्षमता का होना भी अत्यन्त आवश्यक है।

कभी–कभी ऐसी परिस्थिति आ जाती है जिसमें प्राचार्य को कठोर कदम उठाने पड़ते हैं, जिसके कारण परिस्थिति पर पूर्णतया नियंत्रण संभव हो पाता है। शोध से प्राप्त आंकड़ों से प्राप्त निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि प्राचार्य में टॉक्सिक नेतृत्वक्षमता का होना भी अत्यन्त आवश्यक है।

भावी शोध हेतु सुझाव

1. प्रस्तुत शोध केवल 100 शिक्षकों पर किया गया है, परन्तु इसे बड़े न्यादर्श पर किया जा सकता है।
2. समय के अभाव के कारण प्रस्तुत शोध केवल कानपुर जिले में किया गया है इसे अन्य जिलों में भी किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध में प्राचार्यों की नेतृत्वक्षमता का अध्ययन किया गया है भविष्य में प्रबन्धक पर भी किया जा सकता है।
4. प्रस्तुत शोध महाविद्यालय के प्राचार्यो की नेतृत्वक्षमता पर किया गया है इसे भविष्य में प्राथमिक स्तर तथा माध्यमिक स्तर के प्रधानाचार्यों पर भी किया जा सकता है।
5. महाविद्यालयों के प्राचार्यों की नेतृत्वक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन भी किया जा सकता है।
6. प्रस्तुत शोध केवल छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालयों में किया गया है इसे भविष्य में अन्य विश्वविद्यालयों या विदेशों में भी किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Avolio Bruce J., Walumbwa Fred O. & Weber, Todd J., Leadership : Current theories, Research & Future Directions, www.annualreview.org, page no. 441*
2. *बुच, एम0बी (1978–1983), थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, एजुकेशन मैनेजमेंट एंड एडमिनिस्टेशन, एन0सी0ई0आर0टी0 पब्लिकेशन्स, पेज न0 882*
3. *बुच, एम0बी (1983–1988) फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, एजुकेशन मैनेजमेंट एंड एडमिनिस्टेशन,*

द्वितीय वाल्यूम, एन0सी0ई0आर0टी0 पब्लिकेशन्स, पेज न0 1020,1088, 1106

4. *गुप्ता, आर0सी, नेतृत्व : अवधारणा, शैलियां व सिद्धान्त, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, पेज न0 186, 187, 197, 198*
5. *लाल, रमन बिहारी (2012–2013) शिक्षा का अर्थ, प्रकृति, अंग और विस्तार, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, पेज न0 1*
6. *राय, पारस नाथ (2014) संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिकेशन्स, पेज न0 94–97*